INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान CET

Senior Secondary Level – (12th)

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (सीनियर सेकेंडरी स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (सीनियर सेकेंडरी स्तर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/b34h1p

Online Order करें - https://rb.gy/sx59yb

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पेज
	राजस्थान का इतिहास	
1.	प्राचीन सभ्यताएँ	1
2.	राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ	7
3.	राजस्थान में स्वतंत्रता आन्दोलन	58
4.	राजनीतिक जागरण	71
5.	प्रजामंडल आन्दोलन	76
6.	राजस्थान का एकीकरण	86
	कला एवं संस्कृति	
1.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं	91
2.	लोक भाषाएँ (बोलियाँ) एवं साहित्य	138
3.	शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य, लोक संगीत एवं वाद्य, लोक नृत्य एवं नाट्य	148
4.	धार्मिक जीवन, धार्मिक समुदाय	176
5.	मेले एवं त्योंहार, रीति-रिवाज, वेशभूषा तथा आभूषण	194
	राजस्थान की अर्थव्यवस्था	
1.	राजस्थान की खाद्य व व्यावसायिक फसलें, कृषि आधारित उद्योग	214
2.	अर्थव्यवस्था का वृहत परिदृश्य	219
3.	सिंचाई एवं सिंचाई परियोजना	223
4.	राजस्थान में औद्योगिक विकास	223
5.	गरीबी एवं बेरोजगारी	231
6.	विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं	236

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

प्राचीन सभ्यताएं

कांस्ययुगीन सभ्यताएं

1. **कालीबंगा की सभ्यता** – कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज – इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।

- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।

(विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)

- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना। इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग

शल्य चिकित्सा से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।

- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

मृतक संस्कार : कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली हैं, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन : कालीबंगा के निवासी भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था।

- वे जौ और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।
- बड़े बर्तनों पर **'कुरेदकर'** भी **अलंकरण** किया गया है। किन्हीं-किन्हीं मृदपात्रों पर 'ठप्पे' भी लगे हुए मिले हैं और किसी-किसी पर तत्कालीन लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ (मोहरें), मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मनके, औजार आदि से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता कालीन कालीबंगा समाज में शिल्पकला का उचित स्थान रहा है।
- स्त्रियाँ कानों में कर्णाभरण, कर्णफूल, बालियाँ आदि पहनती थी एवं बालों में पिनों का प्रयोग करती थी गले में मनकों के हार धारण करती थी।
- हाथों में शंख, मिट्टी, ताम्र एवं **सेलखड़ी** से निर्मित्त चूड़ियाँ धारण करती थी। अंगुलियों में अंगूठी पहनती थी (एक शव के साथ ताम्र-दर्पण एवं कान के पास कुण्डल भी मिला है।
- स्पष्टतया कालीबंगा निवासी **प्रसाधन प्रेमी** थे।
- कालीबंगा उत्खनन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि इसने सैन्धव लिपि की पहचान करने के प्रयास में एक ठोस दिशा-निर्देश प्रस्तुत किया है।
- पाकिस्तान में 'कोटदीजी' स्थान पर प्राप्त पुरातात्विक अवशेष कालीबंगा के अवशेषों से काफी मिलते - जुलते हैं। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।)**
- सिन्धु-सरस्वती सभ्यता का विनाशः संभवत् भूकम्प या भूगर्भीय व जलवायु के परिवर्तन के कारण इस समृद्ध नगरीय सभ्यता के केन्द्र का नाश हो गया था। जो समुद्री हवाएँ पहले इस ओर नमी-युक्त बहती थीं, वे हवाएँ कच्छ के रण से गुजर कर सूखी चलने लगी।
- संभवतया इसीलिए यह क्षेत्र धीरे-धीरे रेत का समुन्द्र बन गया।
- इस क्षेत्र में बहने वाली सरस्वती नदी का जो वर्णन हमें पुराणों में मिलता है, वह धीरे-धीरे रेत के समुन्द्र में लुप्त हो गई। भूकम्प के प्राचीनतम साक्ष्य यहीं मिलते हैं।

2. आहड़ सभ्यता

- इस सभ्यता का विकास राजस्थान **के उदयपुर जिले में स्थित आहड़ नामक** स्थान पर हुआ अर्थात् इस सभ्यता का सर्वप्रथम प्रमाण आहड़ नामक स्थान पर हुए उत्खनन से प्राप्त हुए थे।

महाराणा भगवत सिंह (1955 – 1984 ई.)

महाराणा महेन्द्र सिंह (1984 ई.)

- इस तरह 556 ई. में जिस गुहिल वंश की स्थापना हुई बाद में वहीं सिसोदिया वंश के नाम से जाना गया। जिसमें कई प्रतापी राजा हुए, जिन्होंने इस वंश की मानमर्यादा, ईज्जत और सम्मान को न केवल बढ़ाया बल्कि इतिहास के गौरवशाली अध्याय में अपना नाम जोड़ा आज राजस्थान का इतिहास इन्हीं वीरो की शहादत का पर्याय बन गया है।

❖ **चौहान वंश का इतिहास**

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) – शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं । वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम – चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम – पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजयमेरू (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.) – अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया ।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया ।**
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है ।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुड़वाकर अढ़ाई दिन का झोपडा बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है ।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री – कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था

❖ **रणथम्भौर के चौहान**

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक
  साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद्य दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह

कार्य, चारण व भाट आदि को अनुदान स्वरूप दी जाती थी।

इसके अलावा भूमि को और दो भागों में बांटा गया-

- कृषि भूमि (Agricultural land) – खेती योग्य भूमि।
- चरनोता भूमि (Charnote land)- पशुओं के लिए चारा उगाया जाता था।

लगान वसूली की विधि (Tax collection method)

लगान वसूली की तीन विधि अपनाते थे-

लाटा या बटाई विधि- फसल कटने योग्य होने पर लगान वसूली के लिए नियुक्त अधिकारी की देखरेख में कटाई तथा धान साफ होने पर राज्य का भाग अलग किया जाता था।

कून्ता विधि- खड़ी फसल को देखकर अनुमानित लगान निर्धारित करना ।

अन्य विधि – इसे तीन भागों में – मुकाता, डोरी और घूघरी

डोरी और मुकाता में कर निर्धारण एक मुश्त होता था। नकद कर भी लिया जाता था । डोरी कर निर्धारण में नापे गये भू-भाग का निर्धारण करके वसूल करना।

घूघरी कर विधि के अनुसार शासक, सामन्त एवं जागीरदार किसान को जितनी घूघरी (बीज) देता था उतना ही अनाज के रूप में लेता था । दूसरी घूघरी विधि में प्रति कुआं या खेत की पैदावार पर निर्भर था।

मध्यकाल में राजस्थान में प्रचलित विभिन्न लाग-बाग।

- **<u>प्रशासनिक व्यवस्था</u>**

भू-राजस्व के अतिरिक्त कृषकों से कई अन्य प्रकार के कर वसूल किए जाते थे उन्हें लाग - बाग कहा जाता था लाग-बाग दो प्रकार के थे-

- नियमित
- अनियमित

नियमित लाग – की रकम निश्चित होती थी और उसकी वसूली प्रतिवर्ष या 2-3 वर्ष में एक बार की जाती थी ।

अनियमित लाग - की रकम निश्चित नहीं थी उपज के साथ-साथ यह कम या ज्यादा होती रहती थी इन लागों के निर्धारण का कोई निश्चित आधार नहीं था।

- **नल बट एवं नहर वास** - यह लाग सिंचित भूमि पर ली जाती थी ।
- **जाजम लाग** - भूमि के विक्रय पर वसूली जाने वाली लाग।
- **सिंगोटी** - मवेशी के विक्रय के समय वसूली जाने वाली लाग ।
- **मलबा और चौंधर बाब** – मारवाड़ में मालगुजारी के अतिरिक्त किसान से यह कर वसूल करने की व्यवस्था थी मलबा की आय से फसल की रक्षा संबंधी किए गए खर्च की पूर्ति की जाती थी और उन व्यक्तियों को पारिश्रमिक देने की व्यवस्था रहती थी जिन्होंने बटाई की प्रक्रिया में भाग लिया था ।

मारवाड़ में जागीर क्षेत्र में खारखार, कांसा, शुकराना (खिड़की या बारी खुलाई) हासा, माचा, हल, मवाली, आदि प्रमुख लागें थी ।

- **धूँआ भाछ** - बीकानेर राज्य में यह कर वसूल किया जाता था ।
- **घर की बिछोती** - जयपुर राज्य में इस कर की वसूली की जाती थी ।
- **घास मरी** - विभिन्न प्रकार के चराई करो का सामूहिक नाम था ।
- **अंगाकर** - मारवाड़ में प्रति व्यक्ति ₹ । की दर से महाराजा मानसिंह के समय इस कर की वसूली की गई थी ।
- **खेड़ खर्च** - राज्य में सेना के खर्च के नाम से जो कर लिया जाता था उसे खेड़ खर्च या फौंज खर्च की संज्ञा दी गई थी ।
- गनीम बराड़ - मेवाड़ में युद्ध के समय गनीम बराड़ कर वसूल किया जाता था ।
- **कागली या नाता कर** - विधवा के पुनर्विवाह के अवसर पर प्रतिभा ₹ । की दर से यह कर वसूल किया जाता था।
- मेवाड़ में नाता बराड़, कोटा राज्य में नाता कागली, बीकानेर राज्य में नाता और जयपुर राज्य में छैली राशि के नाम से यह कर लिया जाता था ।
- **जकात कर - बीकानेर राज्य में सीमा शुल्क आयात निर्यात और चुंगी कर का सामूहिक नाम जकात था ।**
- जोधपुर और जयपुर राज्य में पारिवारिक भाषा में इसे सायर की संज्ञा दी थी ।
- **दाण कर** - मेवाड़ और जैसलमेर राज्यों में माल के आयात निर्यात पर लगाया जाने वाला कर दाण कहलाता था ।
- **मापा, बारुता कर** – मेवाड़ में । गाँव से दूसरे गाँव में माल लाने ले जाने पर यह कर वसूल किया जाता था ।
- जबकि बीकानेर राज्य में बिक्रीकर को मापा के नाम से पुकारते थे ।
- **लाकड़ कर** - जंगलात की लकड़ियों पर लाकड़ कर लिया जाता था ।

इस कर को बीकानेर में काठ जयपुर में दरख्त की बिछोती मेवाड़ में खड़लाकड़ और मारवाड़ में कबाड़ा बाब के नाम से पुकारते थे ।

- **राली लाग** - प्रतिवर्ष काश्तकार अपने कपड़ों में से एक गद्दा या राली बना कर देता था जो जागीदार या उसकी कर्मचारियों के काम आती थी।
- **दस्तूर** – भू-राजस्व कर्मचारी पटेल पटवारी कानूनगो तहसीलदार और चौधरी जो अवैध रकम किसानों से वसूल करते थे उसे दस्तूर कहा जाता था।
- **नजराना** - यह लाग प्रतिवर्ष किसानों से जागीरदार और पटेल वसूल करते थे जागीरदार राजा को और पटेल तहसीलदार को नजराना देता था जिसकी रकम किसानों से वसूल की जाती थी ।

कला एवं संस्कृति

अध्याय – I

स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं

- **मंदिर –** भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।
  राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1.) नागर या आर्य शैली-

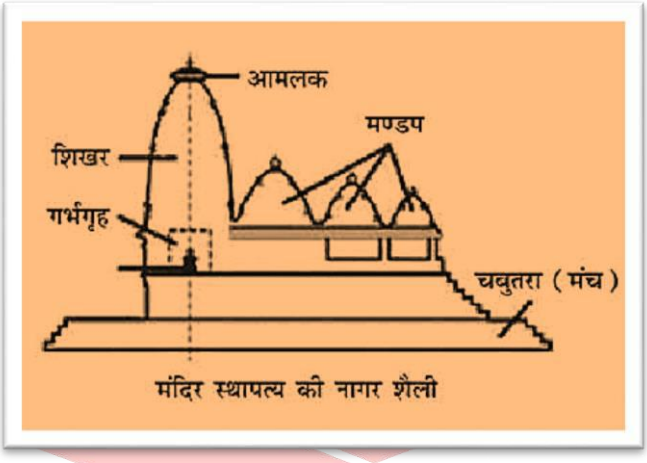

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण)।

(2.) भूमिज शैली

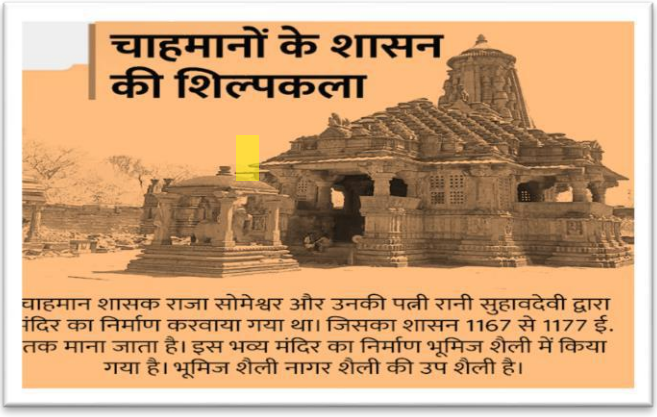

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

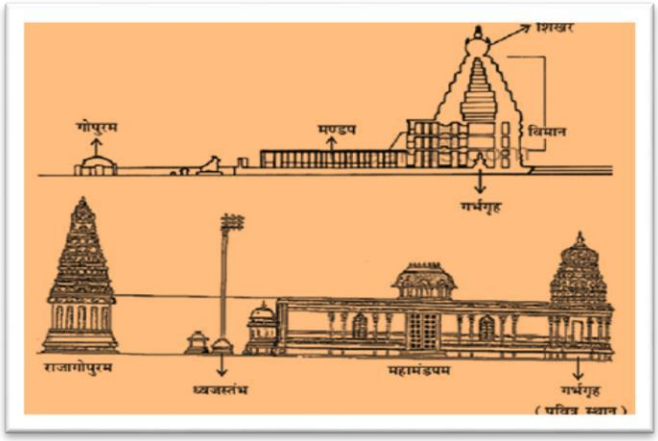

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा) मनोरथ स्वामी मंदिर (चित्तौड़) मुकन्दर का शिव मंदिर, शीतलेश्वर महादेव मंदिर (झालरापाटन)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर), कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी, दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य)/ महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया, जोधपुर ग्रामीण)

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

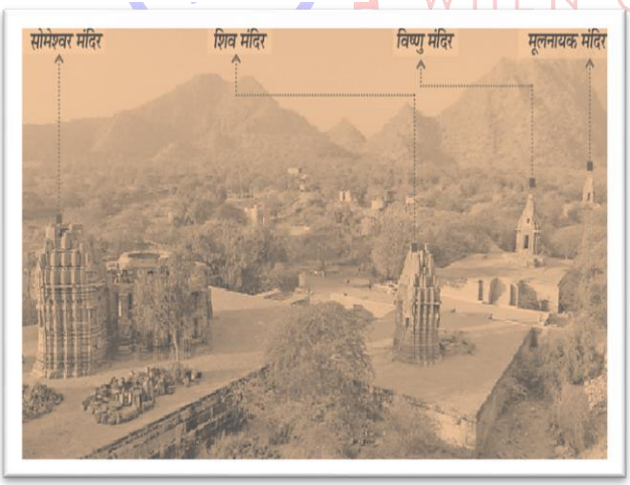

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहो कहते है। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

❖ ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे-छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छीछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बालोतरा में स्थित है।

ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर) - इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।

❖ **कपिल मुनि का मन्दिर (कोलायत, बीकानेर)**

- यह मन्दिर सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि का है।
- यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला भरता है।
- कपिल मुनि का जन्म पुष्कर में हुआ था। इनके पिता ब्रह्मा के पुत्र महर्षि कर्दम और माता मनु की पुत्री देवभूति थी।
- इस मंदिर में दीपदान होता है।
- इस झील में 52 घाट बने है।
- यहाँ स्थित कोलायत झील में करणीमाता के पुत्र लाखा की मृत्यु हो गयी थी जिस कारण चारण जाति के लोग इस मेले में भाग नहीं लेते है।

❖ **बाड़ौली का शिव मन्दिर (भैंसरोड़गढ़, चित्तौड़गढ़)**

- इस मन्दिर का निर्माण 8वीं सदी के आसपास तोरमाण हूण के पुत्र मिहिरकुल ने करवाया था।
- यहाँ स्थित मन्दिर में पंचरथ गर्भगृह है।
- इस मन्दिर में शिव पार्वती की मूर्तियाँ हैं।
- यह मन्दिर चम्बल व बामणी नदी के किनारे स्थित है।
- इन मन्दिरों की सर्वप्रथम खोज 1821ई. में कर्नल जेम्स टॉड ने की थी।

❖ **मातृ कुण्डिया मंदिर (चित्तौड़गढ़)**

- यह भगवान शिव का मंदिर है जो बनास नदी के किनारे मातृ कुण्डिया (राशमी, चित्तौड़गढ़) मे स्थित है।
- यहाँ लक्ष्मण झूला प्रसिद्ध है।
- इसे मेवाड़ का हरिद्वार कहते है।

❖ **सांवलिया सेठ मंदिर (मंडफिया गाँव,चित्तौड़गढ़)**

- यह मन्दिर भगवान श्री कृष्ण का है।
- इस मंदिर में भगवान कृष्ण की काले रंग की मूर्ति है।
- इस मंदिर को अफीम मंदिर भी कहते है।
- यहाँ जल झूलनी ग्यारस का मेला भरता है।

❖ **सालासर बालाजी मन्दिर (सालासर, चुरू)**

- माना जाता है कि हनुमानजी की यह मूर्ति जमीन से प्रकट हुई थी।
- 1737 ई. आसोटा गाँव के मोहनदास जी नामक किसान को खेत में काम करते समय खेत में यह मूर्ति मिली जिसे उन्होंने सालासर नामक स्थान पर स्थापित कर मंदिर बनवाया।
- इस मन्दिर के निर्माणकर्ता दो मुस्लिम कारीगर नूरा व दाउद थे।
- यह मन्दिर सम्पूर्ण भारत में बालाजी का एकमात्र ऐसा मन्दिर है जिसमें दाढ़ी – मूँछों वाले हनुमान विराजमान है।
- हनुमान जयंती (चैत्र पूर्णिमा) को यहाँ विशाल मेला भरता है।

❖ **बेणेश्वर धाम (नवाटापरा, डूंगरपुर)**

- यहाँ शिव मन्दिर है जो सोम, माही, जाखम नदियों के संगम पर बना है।
- इस मन्दिर का निर्माण महारावल आसकरण ने करवाया था।
- इसे आदिवासियों का कुम्भ, बागड़ का पुष्कर, बागड़ का कुम्भ कहते हैं।
- बेणेशवर धाम की स्थापना 1727 ई. में संत मावजी ने की थी।
- आदिवासी अपने पूर्वजों की अस्थियों का यहाँ विसर्जन करते है।
- यहाँ माघ पूर्णिमा को मेला भरता है।
- भारत का यह एकमात्र मंदिर जिसमें खंडित शिवलिंग की पूजा होती है।

❖ **बुड्ढा जोहड़ (रायसिंहनगर, अनूपगढ़)**

- इसे राजस्थान का अमृतसर भी कहते है।
- इसका निर्माण बाबा फतेहसिंह ने करवाया।
- श्रावण अमावस्या को यहाँ विशाल मेला भरता है (जबकि सिक्खों का राजस्थान में सबसे बड़ा मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन साहवा (चूरू) में भरता है।
- अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के बाद यह भारत का सबसे बड़ा गुरुद्वारा माना जाता है।

- इस आक्रमण के समय किले में गोला बारुद्ध समाप्त होने पर चाँदी के गोले दागे गये थे। (बीकानेर का सेनापति अमरचंद सुराणा)

❖ **भरतपुर का किला (लोहागढ़)**

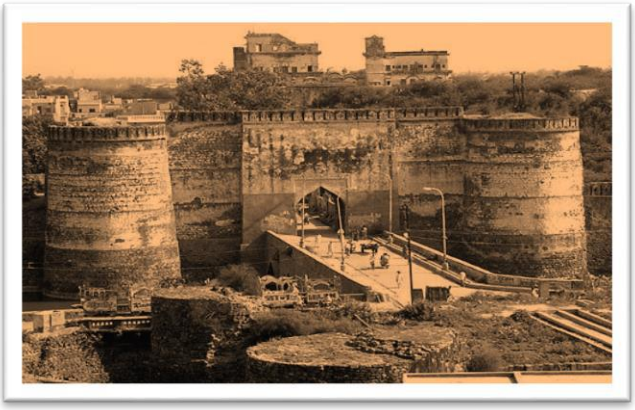

- इस दुर्ग का निर्माण 19 फरवरी, 1733 ई . में सूरजमल जाट ने करवाया।
- दुर्ग में प्रवेश के मुख्य दरवाजे हैं 1. उत्तरी अष्टधातु दरवाजा 2. दक्षिणी लोहिया दरवाजा 3. सूरजपोल 4. भूतापोल 5. हवा पोल
- दुर्ग के चारों ओर स्थित खाईयों में सुजानगंगा व मोतीझील नहरों का पानी आता है।
- यह दुर्ग मिट्टी का बना दुर्ग कहलाता है जिसके चारों ओर दोहरा परकोटा है।
- यह पारिख दुर्ग की श्रेणी में आता है।
- 1765 ई . में भरतपुर शासक जवाहरसिंह ने दिल्ली पर आक्रमण कर लाल किले में लगा अष्टधातु के दरवाजे को उखाड़कर लोहागढ़ के उत्तरी भाग में लगवाया। माना जाता है कि यह अष्टधातु दरवाजा 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी चित्तौड़गढ़ से उतारकर लेकर गया था तथा दिल्ली में झीरी के किले में लगवाया जहाँ से उतारकर शाहजहाँ ने लाल किले में लगवाया।
- दिल्ली विजय पर जवाहरसिंह ने जवाहरबुर्ज का निर्माण करवाया जिसमें भरतपुर शासकों का राजतिलक होता था।
- 1805 ई. में जसवंतराव होल्कर को इस दुर्ग में शरण दी गई जिस कारण अंग्रेज अधिकारी लार्ड लेक ने आक्रमण किया लेकिन इसे जीत नही पाया इसलिए इसका नाम अजयगढ़ या लोहागढ़ पड़ गया। इस
  विजय के उपलक्ष में शासक रणजीतसिंह ने फतेहबुर्ज का निर्माण करवाया।
- इस दुर्ग के लिए कहावत - 8 फिरंगी, 9 गौरा लड़े जाट का 2 छोरा भी प्रचलित है।
- दुर्ग में प्रमुख दर्शनीय स्थलों में किशोरी महल, गंगामन्दिर, लक्ष्मणमंदिर (राजस्थान में एकमात्र), वजीर की कोठी, बिहारीजी का मन्दिर, मोहनजी का मन्दिर, राजेश्वरी माता मन्दिर, जामा मस्जिद, कचहरी किला में स्थित है।
- राजस्थान एकीकरण के प्रथम चरण मत्स्यसंघ का उद्घाटन 18 मार्च, 1948 इसी दुर्ग में हुआ।

❖ **बयाना का किला** (भरतपुर) - पौराणिक ग्रंथों के अनुसार बाणासुर ने ही बयाना (प्राचीन नाम शोणितपुर या भंडानक था) नामक नगर की स्थापना की थी।

- बाणासुर की पुत्री ऊषा और भगवान श्रीकृष्ण के प्रपौत्र अनिरुद्ध का प्रेमाख्यान श्रीमद भागवत और पुराणों में वर्णित है।
- सन 322 में गुप्तवंश के चंद्रगुप्त का शासन था। उस समय बयाना क्षेत्र में पुष्प गुप्त को अपना गवर्नर नियुक्त किया था।
- सन 371-72 में सम्राट समुद्रगुप्त के सामंत वारिककुलीय क्षत्रप ने यज्ञ स्तंभ खड़ा किया। जिसे समुद्रगुप्त का विजय स्तम्भ कहते है जो राजस्थान का प्रथम विजय स्तम्भ है।
- इसके अलावा 960 ई. में प्रतिहार वंश ने राज किया।
- इसके अलावा सल्तनत काल, मुगल साम्राज्य और 1740 में भरतपुर के जाटों ने राज कर लिया।
- इस दुर्ग का निर्माणकर्ता विजयपाल यादव को माना जाता है जिसने1040 ई. में इसका निर्माण करवाया। महाराजा विजयपाल ने 999-1043 तक राज किया।
- इस दुर्ग को बादशाह दुर्ग, विजयगढ़ दुर्ग, विजय मंदिर किला, सुल्तान कोट, बाणासुर कहते हैं।
- खानवा युद्ध से पूर्व राणा सांगा ने 16 फरवरी, 1527 ई. को बयाना के मुगल किलेदार मेहंदी ख्वाजा को पराजित कर बयाना दुर्ग पर अधिकार किया था। लेकिन खानवा युद्ध में राणा सांगा की पराजय के बाद बयाना दुर्ग पर पुनः बाबर का अधिकार हो गया।
- यहाँ अकबर की छतरी, दाऊद खा की मीनार, लोदी की मीनार, सादुल्ला सराय, जहांगिरी दरवाजा, उषा मन्दिर, बारहदरी, उषा मस्जिद स्थित है।
- उषा मन्दिर काइस मन्दिर का निर्माण बाणासुर ने करवाया था लेकिन पुनः निर्माण फक्का वंश के राजा लक्ष्मण सेन गुर्जर की रानी चित्रलेखा व पुत्री मंगलाराज ने 936 ई. में करवाया। जिसे इल्तुतमिश ने बदलकर उषा मस्जिद बना दिया।
- 18वीं सदी जाट शासकों ने उषा मस्जिद से पुनः उषा मन्दिर बना दिया।

❖ **तारागढ़ (बूंदी)**

- इसका निर्माण 1354 ई. में बरसिंह हाड़ा ने करवाया।

अभ्यास प्रश्न

1. तमाशा मूलतः महाराष्ट्र का लोक नृत्य है, लेकिन ये राजस्थान के किस जिले में प्रसिद्ध है ?

A. चूरू B. झुंझुनू
C. सीकर D. जयपुर **(D)**

2. गौहरजान नर्तिका का संबंध किस लोक नाट्य से है ?

A. रम्मत B. तमाशा
C. गवरी D. चारबैत **(B)**

3. राजस्थान में पाट संस्कृति के क्षेत्र के प्रसिद्ध है ?

A. जोधपुर B. जैसलमेर
C. बीकानेर D. कोटा **(C)**

4. मेवाड़ के भीलो द्वारा किया जाने वाला राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य /राजस्थान का मेरूनाटय कौन - सा है?

A. रम्मत B. रामलीला
C. गवरी/राई D. चारबैत **(C)**

5. गवरी नृत्य में भगवान शिव का रूप करने वाला नाटककार कहलाता है ?

A. बूड़िया B. पुरिया/राई
C. झामटिया D. कुटकडिया **(B)**

6. गवरी नाटक में कुल कितनी लघु नाटिकाऐ हैं और सबसे अंतिम नाटिका का क्या नाम है ?

A. 9, घडावत B. 10, मियावड
C. 11, वलावण D. 12, भंवरा- भंवरी **(C)**

7. निम्न में से किस लोक नृत्य के जनक केकड़ी (अजमेर) के बिग्गाजी जाट या नागाजी जाट माने जाते हैं जो कि एक व्यवसायिक नाटक है ?

A. भवाई B. बहरूपिया
C. चारबैत D. नौटंकी **(A)**

8. लिटिल बवंडर की उपाधि प्राप्त श्रेष्ठा सोनी किस लोकनाट्य से जुड़ी है ?

A. भवाई B. गवरी
C. चारबैत D. नौटंकी **(A)**

9. राजस्थान में नौटंकी लोकनाट्य के जनक किसे माना जाता है?

A. नत्थाराम शर्मा B. भूरीलाल
C. गिरिराज प्रसाद D. फैजुल्ला खां **(B)**

10. चारबैत, जो राजस्थान कहाँ की प्रसिद्ध है?

A. जैसलमेर B. टोंक
C. बाँसवाड़ा D. श्रीगंगानगर **(B)**

अध्याय - 4

धार्मिक जीवन, धार्मिक समुदाय

❖ **राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय**

- प्रदेश में सर्वाधिक हिन्दू पाये जाते हैं, जो वैष्णव धर्म में आस्था रखते हैं।
- यहाँ मुख्य रूप से वैष्णव, शैव व शाक्त मत के अनुयायी पाये जाते हैं।
- ये मत ही अनेक सम्प्रदायों में बंटे है।
- राजस्थान में मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों के लोग पाये जाते हैं -

1. सगुण सम्प्रदाय -

- इसमें ईश्वर को सर्वस्व मानकार ईश्वर के मूर्त रूप की पूजा - आराधना की जाती है।
- इसमें रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, निर्बाक सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय, पाशुपत सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय, मीरा दासी सम्प्रदाय, निष्कलंकी सम्प्रदाय मुख्य रूप से सम्मिलित है।

2. निर्गुण सम्प्रदाय -

- इस मत के समर्थक ईश्वर को निराकार एवं निर्गुण परमसत्ता मानकर उसकी भक्ति करते है।
- ये निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते है, जो आत्मा व मूर्ति पूजा के विरोधी होते हैं।
- निर्गुण भक्ति धारा में मुख्यतः - विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दादूपंथी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, परनामी सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, लालदासी सम्प्रदय, कबीर पंथी सम्प्रदाय आदि शामिल है।

❖ **राजस्थान के प्रमुख सगुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय**

❖ **मीरा बाई (मीरा दासी सम्प्रदाय)**

- मीरा का जन्म 1498 ई. मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम (वर्तमान ब्यावर) में हुआ।
- मीरा का जन्म का नाम प्रेमल था, इन्हें राजस्थान की राधा भी कहा जाता है।

योजना शुरू की गई है। जिससे कि वहाँ के युवाओं को रोजगार मिल सके।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट (ILO):

- हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने वर्ल्ड ऑफ वर्क रिपोर्ट पर ILO मॉनिटर का नौवाँ संस्करण ज़ारी किया,
- वर्ष 2022 की पहली तिमाही में वैश्विक स्तर पर काम के घंटों की संख्या में गिरावट आई है, जो कोविड-19 से पहले रोज़गार की स्थिति से 3.8 प्रतिशत कम है। इसका मुख्य कारण हाल ही में चीन में लॉकडाउन, यूक्रेन एवं रूस के बीच संघर्ष और खाद्य एवं ईंधन की कीमतों में वैश्विक वृद्धि है।

भारत :-

- महामारी से पहले रोज़गार में संलग्न हर 100 महिलाओं में से महामारी की इस पूरी अवधि के दौरान औसतन 12.3 महिलाओं ने अपना रोज़गार खो दिया।
- इसके विपरीत प्रत्येक 100 पुरुषों पर यह आँकड़ा 7.5 है।
- इसलिये ऐसा लगता है कि महामारी ने देश में रोज़गार भागीदारी में पहले से ही व्याप्त लैंगिक असंतुलन को बढ़ा दिया है।
- भारत में महिला रोज़गार में कमी आई है, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में।

अध्याय – 6

विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं

अटल भूजल योजना

- अटल भूजल योजना भारत सरकार एंव विश्व बैंक के सहयोग से (50:50 प्रतिशत) । अप्रेल, 2020 से लागू की गई है। इस योजना में भू-जल विभाग नोडल विभाग एवं कृषि, उद्यानिकी, जलग्रहण एवं भू-संरक्षण, जल संसाधन, पंचायतीराज एवं ग्रामीण विकास, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, ऊर्जा एवं वन विभाग मुख्य सहभागी विभाग है। यह योजना पांच वर्षो 2020-21 से वर्ष 2024-25 तक के लिये है । राजस्थान राज्य 5 वर्षो के लिये कुल बजट ₹1,189.65 करोड़ स्वीकृत है। परियोजना हेतु राज्य के 17 जिलों की 38 पंचायत समितियों के 1,139 ग्राम पंचायतों को चिन्हित किया गया है।

- **मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक दुग्ध उत्पादक सम्बल योजना:** इस योजनान्तर्गत वर्ष 2022-23 में दुग्ध उत्पादकों को ₹5 प्रति लीटर की दर से अनुदान राशि स्वीकृति जारी की जा चुकी है। इस योजनान्तर्गत वर्ष 2022-23 के लिए ₹440 करोड़ का प्रावधान किया गया है। दुग्ध संघों को अप्रैल से नवम्बर, 2022 तक की अवधि के लिए ₹160.70 करोड़ की अनुदान राशि का भुगतान किया जा चुका है ।

- **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना :-** राज्य में वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना शुरू की गई, जिसके अन्तर्गत सूचीबद्ध क्षेत्र में अधिसूचित फसल उगाने वाले किसानों की फसल का बीमा अनिवार्य रूप से किया जाता है। खरीफ 2022 में 47.46 लाख किसानों का बीमा किश्त के रूप में ₹83.60 करोड़ की राशि समस्त केन्द्रीय सहकारी बैंकों द्वारा बीमा कम्पनियों को नवम्बर, 2022 तक प्रेषित की गई ।

- **स्वरोजगार क्रेडिट कार्ड योजना :-** स्वरोजगार क्रेडिट कार्ड योजना के अन्तर्गत गैर कृषि गतिविधियों हेतु ₹50,000 तक के ऋण 5 साल की अवधि के लिए उपलब्ध करवाए जाते हैं। वर्ष 2022-23 में नवम्बर, 2022 तक केन्द्रीय सहकारी बैंक द्वारा ₹1.29 करोड़ तथा प्राथमिक भूमि विकास बैंक द्वारा ₹1.23 करोड़ के ऋण वितरित किए गए है ।

- **मिशन अमृत सरोवर :-** मिशन अमृत सरोवर का उद्देश्य देश के प्रत्येक जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवर (तालाबों) का निर्माण / विकास करना है, जिसके लिए राज्य का लक्ष्य 2,475 है। प्रत्येक अमृत सरोवर में लगभग 10,000 क्यूबीक मीटर की जल धारण क्षमता के साथ न्यूनतम एक एकड (0.4 हैक्टर) का तालाब क्षेत्र होगा। 22 दिसम्बर, 2022 तक सभी जिलों में अमृत सरोवर पोर्टल पर 5,199 कार्यों की पहचान की गई है, जिनमें से 3,329 कार्य (2,475 के लक्ष्य का 135 प्रतिशत) शुरू कर दिए गए

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/b34h1p 1 web.- https://rb.gy/sx59yb

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
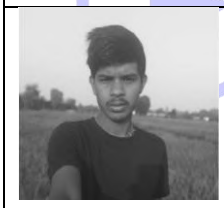	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
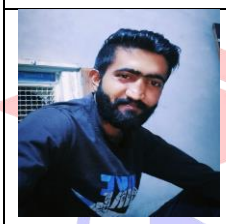	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/b34h1p

Online Order करें - https://rb.gy/sx59yb

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE